मातृ पोषण एवं 6-23 माह के बच्चों के पोषण को सुदृढ़ करने में DPO और CDPO की भूमिका

गर्भवती एवं धात्री महिलाओं तथा 6-23 माह आयु के बच्चों को समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण पोषण सेवाएं उपलब्ध कराने में DPO और CDPO की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे अपनी प्रभावी योजना व क्रियान्वयन, सहयोगात्मक पर्यवेक्षण, डेटा आधारित समीक्षा और कार्रवाई के माध्यम से अपने जनपद व प्रोजेक्ट में पोषण संकेतकों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

DPO और CDPO की मुख्य भूमिकाएं:

- **प्रमुख योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन:** पीएमएमवीवाई, टीएचआर, सीबीई जैसी योजनाओं को प्रभावी एवं समयबद्ध तरीके से क्रियान्वित करवाना ।
- **पोषण ट्रैकर में डेटा की गुणवत्ता:** मातृ पोषण, टीएचआर, वजन निगरानी, सीबीई आदि से संबंधित डेटा की गुणवत्ता सुनिश्चित करना ताकि योजनाओं की प्रभावी निगरानी और मूल्यांकन संभव हो सके।
- **डेटा आधारित समीक्षा और कार्रवाई:** मातृ और शिशु पोषण संकेतकों की नियमित समीक्षा करना और आवश्यकतानुसार सुधारात्मक कार्रवाई करना।
- **सहयोगात्मक पर्यवेक्षण:** पर्यवेक्षण के दौरान मार्गदर्शक एवं सहयोगी रवैया अपनाकर मातृ एवं शिशु पोषण गतिविधियों को सशक्त करना।
- **लैंगिक समानता को बढ़ावा देना:** गर्भवती महिलाओं और बच्चों से जुड़े जेंडर आधारित भेदभाव को दूर करने हेतु लड़का-लड़की दोनों को समान पोषण और देखभाल के लिए अपने जनपद में परिवार और समुदाय स्तर पर निरंतर संवाद और संवेदनशील प्रयासों को प्रोत्साहित करना।
- **सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार:** निम्न सेवाओं की गुणवत्तापूर्ण और समयबद्ध उपलब्धता सुनिश्चित करना:
 - CBE (गोद भराई, अन्नप्राशन, वजन दिवस आदि)
 - बच्चों की वृद्धि निगरानी और आवश्यकता अनुसार संदर्भन
 - VHSND में MCP कार्ड और पोषण कॉर्नर का उपयोग
 - टेक होम राशन (THR)
 - गर्भावस्था का शीघ्र पंजीकरण व स्वास्थ्य जांच

- गर्भवती महिलाओं की वेट ट्रेकिंग
- गृह भ्रमण और पोषण परामर्श
- **क्रियाशील वृद्धि निगरानी उपकरणों की उपलब्धता और उपयोग:** इंफैंट और अडल्ट वजन मशीन, इंफैंटोमीटर, स्टैडियोमीटर की सभी केंद्रों पर उपलब्धता और सही उपयोग सुनिश्चित करना।
- **क्षमता वर्धन और जागरूकता:** ICDS कार्यकर्ताओं का मातृ पोषण, ऊपरी आहार और बच्चों की वृद्धि निगरानी पर समय-समय पर प्रशिक्षण करवाना और समुदाय में जागरूकता अभियान संचालित करना।